सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

● विमला महरिया 'मौज'

सृजक-सृजन-समीक्षा

विमला महरिया "मौज"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

विमला महरिया "मौज" का परिचय

नाम : विमला महरिया "मौज"

जन्म तिथि : 20/12/1980

जन्म स्थान : सिंगोदड़ा, लक्ष्मणगढ़

सीकर (राजस्थान)

माता का नाम : श्रीमती बरजी देवी

पिता का नाम : श्री प्रहलाद महरिया

पति का नाम. : डॉ०प्रदीप कुमार "दीप"

शैक्षणिक योग्यता : एम०ए०(अंग्रेजी,हिन्दी,समाजशास्त्र)

बी०एड०, पीएच०डी० शोधरत (समाजशास्त्र), मोहन लाल सुखाड़िया

वि०वि०, उदयपुर(राज०)

शोध विषय : -स्वास्थ्य एंव सामाजिक विकास में योग की भूमिका :

राजस्थान का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सम्प्रति :~अध्यापिका,राजकीय सावित्री बालिका उच्च माध्यमिक

विद्यालय,लक्ष्मणगढ़, (सीकर) शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार.

अभिरूचि - अध्ययन,लेखन एवं समाज सेवा |

रचनाएँ ~

प्रथम प्रकाशित कविता... "किरण रोशनी की" जगमग दीप ज्योति पत्रिका,

अलवर(राज०)

प्रथम प्रकाशित कहानी... "पीतल की कटोरी", जगमग दीप ज्योति पत्रिका,

अलवर (राज०)

प्रथम प्रकाशित लेख - "आह्वान" ,जगमग दीप ज्योति पत्रिका, अलवर(राज०)

11. प्रकाशित काव्य कृति:~

१. चीत्कार उठी किलकारी(2015),प्रकाशक- साहित्यागार, जयपुर(राज०)

२. माँ पुकारे ! लाडले (2016),प्रकाशक - दीप-ज्योति, अलवर(राज०)

३. सोन-पिपासा (2016) , प्रकाशक - साहित्यागार, जयपुर (राज०)

४. बचपन पुकारे ! बालक मन के भोले गीत (2016) प्रकाशक - साहित्यागार,जयपुर (राज०)

12. काव्य कृति(प्रेस में)

१. बिदकणीं घोड़ी (काव्यांजलि)

२.बरजी : कहानी माँ की(खंड काव्य)

३. वधू का दहन (काव्यांजलि)

४. शेखावाटी रा गीतां री गागर (लोकगीत चिंत)

13. पुरस्कार / सम्मान :

१. शक्ति सम्मान , नागरिक परिषद् , लक्ष्मणगढ़ ,सीकर (राज०)

२. श्रीमती सुन्दर देवी डागा स्मृति सम्मान , जगमग दीप ज्योति, अलवर (राज०)

३. चौधरी चरण सिंह रत्न सम्मान, जाट महासभा, सीकर (राज०)

४.गणतंत्र दिवस सम्मान, ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी , लक्ष्मणगढ़, सीकर(राज०)

५.श्रीमती उमा देवी पटेरिया सम्मान-२०१७ (हिंदी लेखिका संघ, भोपाल , मध्यप्रदेश)

कविता,कहानी,लेख,छंद,लोकगीत इत्यादि विधा में लेखन कार्य जारी और विविध पत्र-पत्रिकाओं में रचनाऐं प्रकाशित .....

आत्म-कथ्य

अपनी बात कहाँ से शुरू करूँ ? थोड़ा मुश्किल जरूर है ,परन्तु सब कुछ कहना चाहूँगी ! मेरी जिन्दगी एक पूरी किताब की तरह है,जिसका हर पन्ना संघर्ष और जीत की कहानी कहता है | ठेठ किसान माता-पिता की बड़ी पुत्री होने का गौरव प्राप्त है मुझे ! परिवार में पढ़ने-पढ़ाने का माहौल नहीं था |घर में दादी का साम्राज्य था और उनकी हुकूमत का डंका सारे मौहल्ले में बजता था |पढ़ाई तो दूर ,खाना भी लिमिट का मिलता था ! घर में गाय -भैंसों की संख्या अच्छी खासी थी मगर भंडार की चाबी दादी माँ के नाड़े की शोभा थी | खैर जो भी था ! माँ के साथ लगी रहती थी,जब सात-आठ साल की हो गई तो माँ की किसी सहेली ने कहा कि मुझे स्कूल भेजना बहुत जरूरी है | हाँ ! माँ मेरी बहुत ज्ञानी और विदुषी हैं ,जो मुझे प्रेरक कहानियाँ सुनाया करती थी | माँ सातवीं कक्षा पास है और बेजोड़ तर्क-शक्ति की मालकिन भी ! मगर मेरी दादी के आगे रत्ती भर नहीं चलती थी उनकी | जब मेरा छोटा भाई स्कूल जाने लायक हुआ तो माँ को मौका मिला मुझे स्कूल भेजने का और बहाना था कि मैं साथ रहूँगी तो भाई सुरक्षित रहेगा | उसे स्कूल ले जाऊँगी और वापस ले आऊँगी ! दादी की इजाजत मिली और माँ की तो जैसे लॉटरी लग गई | मेरा स्कूल जाते ही दूसरी कक्षा में दाखिला हुआ | यह मौका मेरे बचपन का टर्निंग पॉइंट था | यही से सिलसिला शुरू हुआ अध्ययन का ! कक्षा में प्रथम आना जैसे मेरी जिद बन गई और कक्षा दर कक्षा बढ़ती चली गई| जिन्दगी में बहुत बड़ी-बड़ी मुसीबतों को झेला - क्यों कि जो व्यक्ति

पहला कदम बढ़ाता है ,उसे मानव समाज माफ नहीं करता | साहित्य मेरी नस-नस में भरा है | बचपन में बालहंस,चंदामामा,सभी कॉमिक्स ,पंचतंत्र विक्रम बेताल ,सिंहासन बत्तीसी ,चन्द्रकांता संतति ,और प्रेमचंद की कहानियाँ मुझे बहुत प्रिय रही हैं | एक भी पुस्तक, अपने स्कूल की लाइब्रेरी की नहीं छोड़ती थी | आज भी वही आलम है ,मगर जिम्मेदारियाँ बहुत बढ़ गई हैं ! अत: अध्ययन कम ही हो पाता है | लेखन !! खास तौर से कविता करना मुझे बहुत पसंद है और लेखन में मेरे जीवन साथी का पूर्ण योगदान है | जब मेरा मन होता है ,स्वयं चूल्हा-चौका संभाल लेते हैं | बच्चों को भी संभाल लेते हैं और क्या बताऊँ ? मेरी जैसी संवेदनशील पत्नी को बहुत ही व्यवस्थित रखते हैं | इनसे विवाह से पहले जितनी तकलीफें उठाई ,सबको भुलवा दिया और मेरे जीवन को साहित्यमय बना दिया |

विमला महरिया "मौज"

"सृजक का सृजन"

बड़ी सोच के बड़े नतीजे

बड़ी सोच के बड़े नतीजे,
जैसी मेहनत, वैसे लाभ।
भले विचार,कर्म भले,
भली भोर में फैले आभ।।

स्वस्थ विचार पनपते हैं,
उर्वर मस्तिष्क की कोख से।
बंधन में नहीं बंध पाते हैं,
उन्मुक्त रुकें नहीं रोक से।।

एक विचार अकेला ही,
रच दे,बदले नव इतिहास।
पुष्प गंध सा महकाए,
नए दौर का करे विकास।।

सभ्यताएं पलती-बढ़ती,
नव सृजन के आंगन में।
मानवता-नव निखर उठे,
ज्यों मणि जड़ी हो कांचन में।।

एक सोच उड़ती है गगन में,
एक धरा पर भार बने ।
एक विजय की लिखे इबारत,
एक करारी हार बने।।
एक सोच है जीवनदायिनी,
एक मरण को माने ।

एक सोच होती सुखदायक,
एक ने सारे दुःख जाने।।

एक किरण-सी चमक उठती,
दर्द-दौर के तमस-जाल में।
एक सोच कांटा बन चुभती,
खुशियों की बगिया विशाल में।।

एक सोच है मोक्षदायिनी,
एक उलझती माया में।
एक मानती मन-ममता को,
एक विलसती काया में।।

सोच-सृजन का साथ अनौखा,
विकसित होता नव-विज्ञान।
नए धरातल,नई सफलता,
बढ़ता नित नव सबका ज्ञान।।

मन में उपजें भाव सभी,
नहीं भावनाओं का मोल।
आशाओं का सृजक सारथी,
नई राह देता है खोल ।।

धारण करिए आशावादिता,
नैराश्य से दूर रहें।
मंगल चिंतन, मंगल जीवन,
मंगलमय मगरूर रहें।।

सिंहा

भेड़ चाल में चलने वाले,
कब सिंह बन पाए हैं ।
कभी नहीं इतिहास बदलते,
जो विपदा में घबराए हैं ।।

मतलब के घनघोर भंवर में,
नहीं फंसेगा वीर जवान।
तीर तेज के, धनुष धर्म का,
कर्तव्य है तूणीर समान ।।

जुल्मो-सितम से जो डर जाते,
नहीं मिले उनको अधिकार ।
दुश्मन की सुनकर ललकार,
चुप नहीं रहती है तलवार ।।

ध्वज देश का ऊंचा रहता,
सब कुछ हो जाए कुर्बान ।
अमर शहीदों के खाते में,
जमा रहे हर जय की जान।।

जो बन जाए ढाल दुष्ट की,
ऐसा कछुआ वीर नहीं ।
जिसने छुपकर जान बचाई,
गीदड़ है,रणधीर नहीं।।

कोई दुश्मन या आतंकी,
नजर उठाए देश की ओर।
पल भर में मिट्टी में मिला दे,
ना रात , न देखे उगती भोर।।

हिम्मत से जो लड़ नहीं पाया,
कौन कहेगा उसे महान???
सीना छलनी करे अरि का,
उस पर टिका देश का मान।।

रखवाले सिंहा बलवान,
निशिदिन देश के प्रहरी हैं।
अमर जवानों की ज्योति में,
वीर निगाहें ठहरी हैं।।

धरती मैया सुबक रही

धरती मैया बैठ अकेली ,
चुपके-चुपके सुबक रही।
दर्द भरे मननिधि की लहरें,
देखो कैसी दुबक रही!!!????
अपनेपन का कहर टूटकर,
अपनों को ही लील रहा ।
कुल्हाड़ी है अपने हाथ,
निज कदमों को छील रहा।।
भाई ने भाई का सिर,
कलम किया तलवार से।
कहां?! कौन?!बच पाया है,
खुद अपने ही वार से।।
दिल छलनी हो जाते हैं,
घातक वाणी-वारों से।
कई जनाजे निकले हैं,
अपने ही दरबारों से।।
लालच के हथियारों को,
धारण करके चलता है मौन।
अजनबियों के इस मेले में,
कौन पराया?? अपना कौन???
छल से छीन रहे हैं छलिए,
एक-दूजे के मन का चैन ।
दिन गर्दिश में गुजर रहे ,
आंखों में कटती हैं रैन।।
धन से बड़ा धर्म नहीं कोई,
धन ही सब कर्मों का राज।
कल को भूल चले सब भौतिक,
वैभव में दिखता है आज।।
खूनी खंजर लहराते हैं,
दुष्ट धरा के सीने पर ।
प्यासी आंखें चमक उठतीं,
चषक मदिरा पीने पर।।
जुआ जिंदगी खेल हो गई,
बाजीगर ही भाई है ।
अबलाएं आंसू पीती हैं,
तड़प उठती माई है।।
अपना घर भी हुआ पराया,
जिसकी लाठी,उसकी भैंस।
ताकत और दौलत के पीछे,
दौड़ लगाते हैं लाखों फैंस।।
अपने दीपक घी से जलते,
औरों को अंधकार मिले।
ऐसे लोगों की बगिया में,
कब खुशबू के फूल खिले?

"दोहराऊं इतिहास"

दोहराऊं इतिहास, बात बनाऊं मैं,
मन के टूटे तार,जोड़ नहीं पाऊं मैं।
पोली,चौक-चौबारे खेल रंगीले वो,
संगी-साथी-यार,छैल-छबीले वो ।
बाबा का दुलार, दादी की फटकार,
मां की आंखों से झर,झर-झर बहता प्यार।
चौपालों के मेले , भूल न पाऊं मैं।
मन के टूटे तार,जोड़ नहीं पाऊं मैं।।.....
सिलबट्टे पर बंटती चटनी,ठण्डी रोटी खाती,
हांडी की वो शीतल छाछ, खूब मजे से पीती।
राबड़ी से भरा कटोरा, चटखारे मैं लेती,
बैठ गोद में नानी की, मैं चूंटीया चटकाती।
भोले-भाले नयनों से, मैं सबका मन बहलाती,
चिड़ी-मोर-कोयल की बोली,सबको रोज सुनाती।
मामाजी का प्यार आज भी पाऊं मैं।
मन के टूटे तार जोड़ नहीं पाऊं मैं।।.....
गाय-बैल और बछड़ों की,जब टोली घर आती,
घण्टियों की टनन-टनन,हर मन में हर्ष जगाती।
मंदिर में बजते झांझ-नगाड़े, संध्या का होता वंदन,
चिड़ियों की सुन आरती,भोर घिसा करती चंदन।
जीवन के ये सुंदर राग, भूल चुके हैं सारे आज,
सोने जैसा वक्त पुराना,करती हूँ मैं जिस पर नाज।
अपने बच्चों को भी,दिखला पाऊं मैं।
मन के टूटे तार जोड़ नहीं पाऊं मैं।।.....
दोहराऊं इतिहास, बात बनाऊं मैं।।।.....

"बंधन के सहारे"

मैं तो ! पल-पल तुम्हारी रही ,
पर तुम ! मेरे नहीं हो सके |
तूने ! रोका ,जहाँ मुझे जब ,
मैं वहीं ठहरी,ठिठकी रही ||

ऊँचे दर-दीवारों से घिरी ,
तकती रही रोशनी को नित |
सुख का सूरज तलाशती मैं ,
तेरे घर की देहरी रही ||

बंजर में भी रोपा मुझको ,
बिन पानी प्यास बुझती रही !
अंतस के ऊपजाऊपन से ,
अपनी दमक से फलती रही ||

तूने मुझको छलना चाहा ,
चूड़ी,कंगन देकर बिन्दिया !
और मैं लेती रही सौदा ,
देखो ! खुद को ही छलती रही ||

कह डाला पैरों की जूती ,
पैरों में डाल भी दिया था !
इस सहने की हद तो देखो ,
चुभ रहे कांटे ! चलती रही ||

मैने साँझ कहा !
तूने निशा कहा ,
ऊज्जड़ ! अबला ! चंचला कहा ?
मैं धीरे-धीरे ढ़लती रही ||

बचपन नाथा ! जवानी जकड़ी !
बूढ़ी हुई तो भटकती रही |
तेरी नजरों की लाली बन !
सदा लाल-लाल घुलती रही ||

बन्धन के सहारे बिन बोले ,
तेरे पीछे -पीछे चलती रही |
"मौज" पूछती आज पलटकर ,
एक कमी बता ! जो खलती रही !!

"सृजन की समीक्षा"

1.

सर्वप्रथम अंतरा परिवार को मेरा सादर प्रणाम और अभिनन्दन | आज की केन्द्रीय पोस्ट की उत्सवमूर्ति श्रीमती विमला महरिया "मौज" का मैं पटल पर स्वागत और अभिनन्दन करता हूँ | गाँव की सौंधी मिट्टी में पली-बढ़ी राजस्थान के शेखावाटी अंचल की लब्धप्रतिष्ठित और युवा महिला लेखिका ,कवयित्री, साहित्यकार और समाजसेवी विमला जी अपने साहित्यिक नाम "मौज" को सार्थक करती हुई साहित्य-सागर में अविरल प्रवाहित होकर लहराती प्रतीत होती हैं | जैसा कि अपने आत्मकथ्य में इन्होनें बताया है कि किस प्रकार संघर्षशील रहकर साहित्य के क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल किया है , यह एक गौरव की बात है | यही गौरव आपकी प्रत्येक रचना में देखने को भी मिलता है | आपने अपनी प्रथम रचना **"मंगल चिंतन" के माध्यम से बताया है कि किस प्रकार बड़ी सोच , श्रेष्ठ कर्म , सार्थक विचार और मेहनत के बल पर व्यक्तित्व का पूर्ण विकास संभव है | आपके शब्दों में.....एक विचार अकेला ही रच दे , बदले नव इतिहास|** आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से सृजनात्मक विचार को प्रबलता प्रदान करते हुए आशावादिता को पनपाने का अथक प्रयास किया है | जहाँ आपकी "सिंहा" कविता में ओज गुण की प्रधानता के साथ ही व्यंग्य शैली और राष्ट्र भक्ति की प्रबलता है , वहीं "घरती मैया सुबक रही" कविता में वसुन्धरा का मानवीकरण करते हुए पृथ्वी पर बढ़ रहे मानवीय अत्याचारों का वेदनायुक्त आक्रोशात्मक स्वर भी प्रस्फुटित हुआ है | **मार्मिकता की पराकाष्ठा देखिए- अबलाएं आँसू पीती हैं, तड़प उठती माई है ..... इसी क्रम में एक ओर आपने "दोहराऊं इतिहास"** के माध्यम से मानवीय जीवन की सूक्ष्म और सहज भावनाओं और परम्पराओं की अभिव्यक्ति सरल शब्दों में अभिव्यक्त की है तो दूसरी ओर "बंधन के सहारे" कविता में नारी की मनोव्यथा का सुन्दर और वेदनामय शब्द-चित्रण प्रस्तुत किया है|

व्यथित प्रश्ननात्मक बानगी देखिए - **बचपन नाथा ! जवानी जकड़ी !** बूढ़ी हुई तो भटकती रही !!

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि "मौज" की कविताओं में मानवीय चिंतन और चेतनता के साथ ही मार्मिक भावनाओं के उद्वेलन का अद्भुत संगम है , जो कि साहित्य क्षेत्र की एक निधि भी है |

उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ..

- डॉ० प्रदीप कुमार "दीप"

2.

अंतरा शब्दशक्ति के रविवारीय केंद्रीय रचनाकार विशेषांक में विमला महरिया 'मौज' को उनके परिचय, आत्मकथ्य और रचनाओं के द्वारा जानने का अवसर मिला। उच्च शिक्षा प्राप्त, अध्यापिका के दायित्व का निर्वहन करते हुए अध्ययन, लेखन व समाज सेवा में रत निरंतर सृजन में लीन हैं।

आत्मकथ्य को पढ़ते हुए इनके संघर्ष और जीत की गाथा इनके अदम्य जीवट का परिचय देती है। घर की बड़ी बेटी ने परिवार में पढ़ने-पढ़ाने का माहौल न होते हुए माँ के कारण किस तरह पढ़ने का अवसर पाया जो आगे चल कर जीवन में नए परिवर्तन का कारण बन कर उन्हें अध्ययन और फिर लेखन के संसार से जोड़ गया...यह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। **जीवनसाथी के साथ ने सारे कष्ट भुलवा कर जीवन को साहित्यमय कर दिया....यह जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है**। जो झेला, संघर्ष किया और विजय प्राप्त की... उसकी छाप पहली ही रचना **'मंगल चिंतन'** की पहली दो पंक्तियों में ही दिखाई दे जाती है...बड़ी

सोच के बड़े नतीजे/ जैसी मेहनत, वैसे लाभ।

'सिंहा' डरपोक, मुसीबत में घबराने वालों की प्रवृत्ति की ओर इंगित करती कहती है....कभी नहीं इतिहास बदलते/जो विपदा में घबराए हैं।

तीसरी रचना **' धरती मैया सुबक रही'** धन को सब कुछ मान, भौतिकता में डूबे-फँसे लोगों की स्वार्थी मनोवृत्ति को उजागर करती दिखाई देती है।

'दोहराऊँ इतिहास' में जैसे अपने विगत की स्मृतियों में डूबती-उतराती हुई वेदना में डूब जाती है जब अनुभव होता है कि मन के टूटे तार जोड़ने कठिन ही नहीं असंभव हैं।

'बंधन के सहारे' नारी मन की व्यक्त और अव्यक्त वेदना-व्यथा है।

संघर्षों की अग्नि में तप कर सोना बन निखरी विमला महरिया ' मौज' की रचनाएँ संघर्षों पर विजय गीत लिख विजय ध्वज फहराती प्रतीत होती हैं। सकारात्मक और प्रेरक संदेश देती ये रचनाएँ पाठकों के लिए आलोक स्तंभ बनने में पूरी तरह सफल हैं।

भविष्य में भी ऐसी ही प्रेरक रचनाएँ पढ़ने को मिलेंगी, ऐसी आशा है।

साहित्य साधना अनवरत चलती रहे।

शुभकामनाएँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

3.

विमला महरिया "मौज" की कविता मे सादगी आशावादिता व दर्शन का समन्वयन है।उनकी कविता उनके अनुभवो के क्षण का परत दर परत रचती हुई दिखती है।वे आत्मकथ्य मे स्वयं कहती है कि उनके जीवन का पन्ना संधर्ष की कहानी कहता है और संघर्ष से पाया हुआ कोई भी अनुभव ज्ञान व आत्मसंतुष्टि का खजाना होता है । जिसे वो अपने काव्य

मे पिरोने की बहुत अच्छी कोशिश की है।
वे लिखती है
"बड़ी सोच के बड़े नतीजे,
जैसी मेहनत, वैसे लाभ।
भले विचार,कर्म भले,
भली भोर में फैले आभ।"
वे मानती है कि सार्थक व प्रभावी सोच इतिहास बदलने की ताकत रखती है अच्छी विचार आवश्यक है यही सोच विजय की इबारत लिखती है
अपने कविता" मंगल चिंतन "मे वे लिखती है -
"धारण करिए आशावादिता,
नैराश्य से दूर रहें।"
वही उनकी दूसरी कविता "सिंहा" मे वे अपने वीर जवानो को सिहां बताते हुये कहती है
"रखवाले सिंहा बलवान,
निशिदिन देश के प्रहरी हैं।
अमर जवानों की ज्योति में,
वीर निगाहें ठहरी हैं।"
ये पक्तियां अच्छी लगी वही उसकी शुरूअात
"भेड़ चाल में चलने वाले,
कब सिंहा बन पाए हैं ।
कभी नहीं इतिहास बदलते,
जो विपदा में घबराए हैं ।"
मे भाव कुछ अस्पष्ट लगे कि यह कविता एक आम इंसान के लिए है या वीर जवानों के लिए । अपनेपन की डोर को मजबूत करती कविता "धरती मैया सुबक रही है मे कथ्य अच्छा है ।
"अपनेपन का कहर टूटकर,

अपनों को ही लील रहा ।

कुल्हाड़ी है अपने हाथ,

निज कदमों को छील रहा"

कविता **"दोहराऊं इतिहास"** बेहतरीन लिखा है उनका सीधा साधा ग्रामीण जीवन व उनके बालपन के अनुभव इस कविता के प्रत्येक शब्द मे बहता हुआ लगा।यह बहुत प्रभावी रचना लगी ।

"जीवन के ये सुंदर राग, भूल चुके हैं सारे आज,

सोने जैसा वक्त पुराना,करती हूँ मैं जिस पर नाज"

अपनी कविता **"बंधन के सहारे"** स्त्री का प्रेम मे अपना अस्तित्व तक हार जाती है पति की अनुगामिनी रह जाती है का सुंदर चित्रण है ये शब्द औरत के लिए

"बचपन नाथा ! जवानी जकड़ी !

बूढ़ी हुई तो भटकती रही "बहुत प्रभावी रही।

सार मे यह कहना उचित होगा कि विमला महरिया "मौज" की कविता मे उनके सवच्छ विचार , स्वच्छ भाव सादगी से बहते हैं।

कंचन अपराजिता, चेन्नई

4.

विमला महरिया 'मौज' का सृजक सृजन समीक्षा विशेषांक में स्वागत, **अभिनंदन**।

भावों को तरंगित करती विधाओं विविध रंगों से सुसज्जित , सुघड़ शब्दशैली और सुदृढ़ कहन वाली रचनाओं के लिए हार्दिक **बधाई**। कलम निरंतर चलती रहे यही शुभकामनाएँ,..।

प्रीति सुराना, वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com